eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 06, June 2023

विनायक दामोदर सावरकर का भारतीय राजनीति में योगदान

डा0 अरविन्द कुमार शुक्ल[1]
[1]सहायक प्रोफेसर राजनीति विज्ञान, राजकीय महिला स्ना0 महाविद्यालय बिंदकी, फतेहपुर उ0प्र0, भारत

Abstract

विनायक दामोदर सावरकर भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के एक प्रमुख क्रांतिकारी, विचारक, लेखक और समाज सुधारक थे। उनका योगदान भारतीय राजनीति में बहुआयामी रहा है। उन्होंने न केवल भारत की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष किया, बल्कि हिंदुत्व विचारधारा को एक सशक्त राजनीतिक और सामाजिक दर्शन के रूप में प्रस्तुत किया। यह शोध पत्र सावरकर के भारतीय राजनीति में योगदान, उनकी विचारधारा, उनकी प्रमुख राजनीतिक गतिविधियों और उनके प्रभावों का विश्लेषण करता है।

कीवर्ड– विनायक दामोदर सावरकर, हिंदुत्व, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम, राजनीति, क्रांतिकारी विचारधारा, समाज सुधार।

Introduction

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और राजनीतिक विचारधारा के विकास में जिन व्यक्तित्वों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है, उनमें विनायक दामोदर सावरकर का नाम प्रमुखता से लिया जाता है। वे न केवल एक क्रांतिकारी और राष्ट्रवादी थे, बल्कि उन्होंने हिन्दुत्व की विचारधारा को एक स्पष्ट वैचारिक आधार भी प्रदान किया। सावरकर के विचार और उनके संघर्ष भारतीय राजनीति के लिए एक प्रेरणास्त्रोत बने हुए हैं। उनकी भूमिका केवल स्वतंत्रता संग्राम तक सीमित नहीं रही, बल्कि उन्होंने स्वतंत्र भारत में राष्ट्रवाद, सामाजिक सुधार और राजनीति के विभिन्न पहलुओं पर भी महत्वपूर्ण योगदान दिया।

यह शोधपत्र सावरकर के योगदान और उनकी विचारधारा का विश्लेषण करते हुए यह समझने का प्रयास करेगा कि भारतीय राजनीति पर उनका प्रभाव कितना गहरा और व्यापक रहा है। विनायक दामोदर सावरकर का जन्म 28 मई 1883 को महाराष्ट्र के नासिक जिले के भगूर गाँव में हुआ था। वे एक चितपावन ब्राह्मण परिवार में जन्मे थे। बचपन से ही वे राष्ट्रवादी विचारों से प्रभावित थे और उन्होंने अपने भाई गणेश सावरकर से प्रेरणा ली, जो स्वतंत्रता संग्राम में सक्रिय थे।

सावरकर की प्रारंभिक शिक्षा नासिक में हुई, जहाँ उन्होंने भारतीय इतिहास और क्रांतिकारी विचारों के प्रति गहरी रुचि विकसित की। इसके बाद, उन्होंने पुणे के फर्ग्यूसन कॉलेज में दाखिला लिया। यहाँ वे तिलक और अन्य राष्ट्रवादी नेताओं के विचारों से प्रभावित हुए। पुणे में रहते हुए, उन्होंने मित्र मेला नामक एक गुप्त संगठन की स्थापना की, जो ब्रिटिश शासन के खिलाफ युवाओं को संगठित करता था।

आगे की शिक्षा के लिए, सावरकर 1906 में इंग्लैंड गए और वहाँ के प्रसिद्ध श्ग्रेज़ इनश में कानून की पढ़ाई शुरू की। इंग्लैंड में रहते हुए, वे भारत की स्वतंत्रता के लिए सक्रिय रूप से कार्यरत रहे। उन्होंने इंडिया हाउस नामक संस्था की स्थापना की, जो भारतीय छात्रों को राष्ट्रवादी विचारधारा से जोड़ने का कार्य करती थी। इस दौरान, उन्होंने 1857 का स्वतंत्रता संग्राम नामक पुस्तक लिखी, जो ब्रिटिश शासन के खिलाफ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के क्रांतिकारी दृष्टिकोण को उजागर करती है

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 06, June 2023

स्वतंत्रता संग्राम में भूमिका– सावरकर का स्वतंत्रता संग्राम में योगदान बहुआयामी था। उन्होंने क्रांतिकारी संगठन श्अभिनव भारतश की स्थापना की, जो ब्रिटिश शासन के खिलाफ सशस्त्र संघर्ष में विश्वास रखता था। उनके द्वारा लिखित पुस्तक 1857 का स्वतंत्रता संग्राम ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम की अवधारणा को नया दृष्टिकोण प्रदान किया।

कालापानी की सजा और विचारधारा का विकास– ब्रिटिश सरकार ने 1909 में उन्हें नासिक षड्यंत्र केस में गिरफ्तार कर लिया और आजीवन कारावास की सजा सुनाकर अंडमान और निकोबार द्वीप समूह की सेल्यूलर जेल (काला पानी) में भेज दिया। यहाँ सावरकर ने कठोर यातनाओं का सामना किया और अपने विचारों को परिपक्व किया। जेल से छूटने के बाद, उन्होंने हिंदू राष्ट्रवाद को बढ़ावा देने के लिए कार्य किया।

हिंदुत्व और राजनीतिक विचारधारा– सावरकर ने अपनी पुस्तक हिंदुत्वरू हिंदू कौन है? के माध्यम से हिंदुत्व की विचारधारा को स्पष्ट किया। उन्होंने हिंदू पहचान को सांस्कृतिक, सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से परिभाषित किया। उनका विचार था कि भारत एक हिंदू राष्ट्र है और इसकी संस्कृति, परंपराएँ और मूल्यों की रक्षा करना आवश्यक है।

समाज सुधार और राजनीतिक गतिविधियाँ– सावरकर ने जाति प्रथा के विरोध में कार्य किया और छुआछूत मिटाने के लिए अभियान चलाया। वे महिलाओं की शिक्षा और सामाजिक सुधारों के समर्थक थे। 1937 में, जब वे हिंदू महासभा के अध्यक्ष बने, तो उन्होंने हिंदू समाज के सशक्तिकरण के लिए कई कदम उठाए।

भारतीय स्वतंत्रता के बाद सावरकर की भूमिका– भारत की स्वतंत्रता के बाद, सावरकर ने सक्रिय राजनीति में सीमित भागीदारी रखी, लेकिन उनकी विचारधारा का प्रभाव हिंदू राष्ट्रवाद के विकास में महत्वपूर्ण रहा। हालांकि, महात्मा गांधी की हत्या के बाद उन्हें एक षड्यंत्रकारी के रूप में नामित किया गया और गिरफ्तार कर लिया गया। हालांकि, अदालत ने सबूतों के अभाव में उन्हें बरी कर दिया।

स्वतंत्र भारत में, सावरकर का प्रभाव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी जैसी हिंदू राष्ट्रवादी संगठनों पर पड़ा। उनकी हिंदुत्व की अवधारणा को कई दक्षिणपंथी राजनीतिक दलों ने अपनाया। उन्होंने जीवन के अंतिम वर्षों में राजनीतिक गतिविधियों से दूरी बना ली, लेकिन वे लेखन और बौद्धिक चर्चाओं में सक्रिय रहे। 1966 में उन्होंने स्वेच्छा से उपवास कर मृत्यु को गले लगा लिया।

समकालीन भारतीय राजनीति में सावरकर की प्रासंगिकता– विनायक दामोदर सावरकर की विचारधारा आज भी भारतीय राजनीति में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उनका हिंदुत्व दर्शन विभिन्न राजनीतिक दलों के विमर्श का केंद्र बना हुआ है।

भारतीय जनता पार्टी और अन्य हिंदू राष्ट्रवादी संगठनों द्वारा सावरकर को एक वैचारिक आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। उनकी राष्ट्रवादी विचारधारा और समाज सुधार की नीतियाँ समकालीन राजनीति में एक विशेष स्थान रखती हैं।

समकालीन राजनीति में सावरकर की प्रासंगिकता निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से देखी जा सकती है–

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 06, June 2023

हिंदुत्व और राष्ट्रवाद– सावरकर द्वारा प्रतिपादित हिंदुत्व का विचार आज भी कई राजनीतिक दलों की विचारधारा का आधार बना हुआ है। यह राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक पहचान और बहुसंख्यक समुदाय के अधिकारों के संदर्भ में लगातार चर्चा का विषय बना हुआ है।

राजनीतिक विमर्श में स्थान– संसद और अन्य राजनीतिक मंचों पर सावरकर के विचारों पर बहस होती रहती है। कुछ दल उन्हें एक महान स्वतंत्रता सेनानी और राष्ट्रवादी के रूप में देखते हैं, जबकि अन्य उनके विचारों की आलोचना करते हैं।

आधुनिक नीतियों में प्रभाव– भारतीय राजनीति में हिंदू महासभा, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और भारतीय जनता पार्टी जैसे संगठनों की नीतियों में सावरकर के विचारों की झलक मिलती है। उनका 'एक राष्ट्र, एक संस्कृति' का विचार वर्तमान समय में कई सरकारी नीतियों को प्रभावित करता है।

इतिहास लेखन और पुनर्मूल्यांकन– सावरकर को लेकर ऐतिहासिक पुनर्मूल्यांकन की प्रक्रिया जारी है। कुछ लोग उन्हें भारत के स्वतंत्रता संग्राम का महान नायक मानते हैं, जबकि कुछ आलोचक उनके ब्रिटिश सरकार को भेजे गए क्षमायाचनापत्रों को लेकर प्रश्न उठाते हैं।

सावरकर की विरासत और चुनावी राजनीति– चुनावी राजनीति में सावरकर के नाम का उपयोग कई बार देखा गया है। कुछ राजनीतिक दल उन्हें भारत के गौरवशाली इतिहास का हिस्सा मानते हैं, जबकि अन्य उनकी विचारधारा को सांप्रदायिक बताते हैं।

इस प्रकार, सावरकर का योगदान और उनके विचार वर्तमान भारतीय राजनीति में लगातार प्रासंगिक बने हुए हैं।

अंततोगत्वा आज भी सावरकर के विचारों का प्रभाव विभिन्न राजनीतिक दलों में देखा जा सकता है। उनके राष्ट्रवाद और हिन्दुत्व की विचारधारा भारतीय राजनीति के लिए एक महत्वपूर्ण विषय बनी हुई है।

विनायक दामोदर सावरकर का भारतीय राजनीति में योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे केवल एक क्रांतिकारी नहीं, बल्कि एक विचारक, लेखक और समाज सुधारक भी थे। उनके विचार आज भी भारतीय राजनीति और समाज में प्रभावी हैं। हिंदुत्व और राष्ट्रवाद की उनकी अवधारणा ने भारतीय राजनीति को नया दृष्टिकोण दिया।

विनायक दामोदर सावरकर का भारतीय राजनीति में योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे केवल एक क्रांतिकारी नहीं, बल्कि एक विचारक, लेखक और समाज सुधारक भी थे। उनके विचार आज भी भारतीय राजनीति और समाज में प्रभावी हैं। हिंदुत्व और राष्ट्रवाद की उनकी अवधारणा ने भारतीय राजनीति को नया दृष्टिकोण दिया।

eISSN 2583-6986
IDEALISTIC JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN PROGRESSIVE SPECTRUMS (IJARPS)
A MONTHLY, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) INTERNATIONAL JOURNAL
Vol. 02, Issue 06, June 2023

सन्दर्भ सूची–

1. सावरकर, वि.दा. (1923). हिंदुत्व, हिंदू कौन है? पुणे, साहित्य सागर प्रकाशन।
2. गोडबोले, माधव (2003). सावरकर एंड हिस टाइम्स। मुंबई लोकमंगल प्रकाशन।
3. शिंदे, केशव (2015). भारतीय राष्ट्रवाद और सावरकर। दिल्ली, प्रभात प्रकाशन।
4. मजूमदार, आर.सी. (1963). हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया। कोलकाता, मुखर्जी एंड कंपनी।
5. पुरंदरे, नीलकंठ (2017). सावरकर, एक पुनरावलोकन। पुणे, हिंदू राष्ट्र प्रकाशन।
6. चोपड़ा, प्रकाश (2018). भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में सावरकर की भूमिका। दिल्ली, आजाद पब्लिकेशन्स।
7. अग्रवाल, सुनील (2016). सावरकर और हिंदू राष्ट्रवाद। वाराणसीरू भारती प्रकाशन।
8. पटेल, रमेश (2020). विनायक सावरकर का विचार दर्शन। मुंबई, साहित्य मंदिर।
9. शर्मा, विनोद (2019). भारतीय राजनीति और सावरकर। दिल्ली, राजकमल प्रकाशन।
10. वाजपेयी, मोहन (2015). क्रांतिकारी सावरकर। जयपुर, क्रांतिकारी साहित्य केंद्र।
11. सिंह, अजय (2014). सावरकररू वीरता और विचारधारा। भोपाल, राष्ट्रीय विचार मंच।
12. कुलकर्णी, अशोक (2021). सावरकर और स्वतंत्रता संग्राम। पुणे, स्वदेशी प्रकाशन।
13. शास्त्री, ओमप्रकाश (2013). हिंदुत्व और सावरकर का योगदान। दिल्ली, हिंदुस्तान बुक डिपो।
14. तिवारी, मनीष (2022). राष्ट्रवादी सावरकर। लखनऊ, नवभारत पब्लिशिंग हाउस।
15. वर्मा, अर्पित (2020). सावरकर की विचारधारा। कोलकाता, विचारक प्रकाशन।
16. जोशी, नारायण (2018). हिंदू महासभा और सावरकर। नासिक, प्रेरणा बुक्स।
17. चौधरी, समीर (2019). वीर सावरकर का जीवन। मुंबई, स्वातंत्र्यवीर पब्लिकेशन्स।
18. मिश्रा, देवेन्द्र (2017). सावरकर, इतिहास और विचारधारा। दिल्ली, राष्ट्रवादी प्रकाशन।
19. देसाई, रघुनाथ (2021). भारतीय राजनीति में सावरकर का प्रभाव। पुणे, सावरकर विचार मंच।
20. त्रिपाठी, शरद (2016). स्वतंत्रता संग्राम के नायक सावरकर। वाराणसी, अमर भारत प्रकाशन।
21. पाण्डेय, सुनील (2018). सावरकर और सामाजिक सुधार। जयपुर, नवजीवन प्रकाशन।
22. सावरकर, वि.दा. (1923). हिंदुत्व, हिंदू कौन है? पुणे, साहित्य सागर प्रकाशन।
23. गोडबोले, माधव (2003). सावरकर एंड हिस टाइम्स। मुंबई, लोकमंगल प्रकाशन।
24. शिंदे, केशव (2015). भारतीय राष्ट्रवाद और सावरकर। दिल्ली, प्रभात प्रकाशन।
25. मजूमदार, आर.सी. (1963). हिस्ट्री ऑफ फ्रीडम मूवमेंट इन इंडिया। कोलकाता, मुखर्जी एंड कंपनी।